

Bihar Board Class 7 Social Science Geography Notes

Chapter 12 मौसम और जलवायु

पाठ का सार संक्षेप

किसी निश्चित स्थान पर निश्चित समय में वायुमंडल की तत्कालीन दशा मौसम कहलाती है। तापमान तथा वर्षा दोनों ही मौसम के अन्तर्गत आते हैं। एक ही समय में अलग-अलग स्थानों का तापमान तथा वर्षा की मात्रा अलग-अलग रह सकती है। वायुमंडलीय दशा में भी अंतर आ सकता है।

वायुमंडलीय दशा का अर्थ है-आकाश की स्थिति। इसके तहत धूप, बादल, वर्षा, आर्द्रता, वायु वेग तथा वायु की दिशा। इन सबका विवरण अखबारों में नित्य छपता है। जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक हैं-

1. अक्षांश
2. समुद्र से दूरी
3. पर्वतों की दिशा और अवरोध
4. समुद्री धाराओं की दिशा
5. पवन की दिशा
6. समुद्र तल से ऊँचाई तथा
7. तापमान।

लेकिन इसके बावजूद जलवायु को प्रभावित करने में सौर-ऊर्जा की विशेष भूमिका होती है। जिन स्थानों पर सौर ऊर्जा कम मिलती है वह स्थान अधिक गर्म होता है और जिन स्थानों पर सौर ऊर्जा कम मिलती है वहाँ ठंड होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पृथ्वी पर ताप का मुख्य स्रोत सूर्य का ताप है। सूर्य की किरणें भूमध्य रेखा पर सीधी पड़ती है। इस कारण इसके आसपास गर्मी अधिक पड़ती है। लेकिन भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण जाने पर तापमान कम होते जाता है, क्योंकि यहाँ सूर्य की किरणें क्रमशः तिरछी होती जाती है। तापमान के कम होने का यही कारण है।

उत्तर और दक्षिण दोनों ध्रुवों पर सालों भर बर्फ जमी रहती है।

वायुमंडल का तापमान, सूर्य की किरणों का झुकाव, दिन की लम्बाई, प्रचलित हवाओं, जल और थल के वितरण आदि के कारण भी मौसम प्रभावित होता है। पृथ्वी की सतह पर पड़नेवाले वायु के भार को वायुदाब कहते हैं। जैसे-जैसे ऊँचाई पर जाते हैं, वैसे-वैसे वायुदाब घटता जाता है। पृथ्वी पर सर्वत्र वायुदाब समान नहीं होता। हवा सदैव उच्च दाब से निम्नदाब की ओर बहती है। भूगोल की भाषा में बहने वाली हवा को पवन कहते हैं।

पवन तीन प्रकार के होते हैं-

1. स्थायी पवन
2. मौसमी पवन तथा
3. स्थानीय पवन

कुछ सामान्य मौसमी घटनाएँ हैं-

1. चक्रवात
2. प्रतिचक्रवात तथा
3. वर्षा

लेकिन वर्षा भी तीन प्रकार की होती है-

1. संवाहनिक वर्षा
2. पर्वतीय वर्षा तथा
3. चक्रवातीय वर्षा